

श्रीविद्योपासक एवं उपास्य मन्त्रभेद

मनुश्चन्द्रः कुबेरश्च लोपामुद्रा च कामराट्।अगस्त्यनन्दिसूर्याश्च विष्णुस्कन्दशिवस्तथा॥१॥
दुर्वासाश्च महादेव्या द्वादशोपासकाः मताः।स्मृत्या शक्रश्च चोत्मनी चैव तथाच वरुणस्तथा॥२॥
धर्मराजोऽनलो नागराजो वायुर्बुधस्तथा।ईशानश्च रतिश्चैव तथा नारायणस्तथा॥३॥

- (१) लोपामुद्रोपासिता श्रीविद्या- हसकलहीं हसकहलहीं सकलहीं।
- (२) मनूपासिता श्रीविद्या- कहएईलहीं हकएईलहीं सकएईलहीं।
- (३) चन्द्रोपासिता श्रीविद्या- सहकएईलहीं सहकहएईलहीं हसकएईलहीं।
- (४) कुबेरोपासिता श्रीविद्या- हसकएईलहीं हसकहएईलहीं हसकएईलहीं।
- (५) अगस्त्योपासिता श्रीविद्या- कएईलहीं हसकहलहीं हससकलहीं।
- (६) नन्द्युपासिता श्रीविद्या- सएईलहीं सहकहलहीं सकलहीं।
- (७) इन्द्रोपासिता श्रीविद्या- कएईलहीं हसकहलहीं सकलहीं।
- (८) सूर्योपासिता श्रीविद्या- कएईलहीं सहकलहीं सहसकहहीं।
- (९) शिवोपासिता श्रीविद्या- कएईलहीं हसकहलहीं सहसकलहीं कएईलहस कहलम-हसकलहीं।
- (१०) विष्णूपासिता श्रीविद्या- कएईलहीं हसकहलहीं सहसकलहीं मएईलहीं सहकहलहीं सकलहीं।
- (११) दुर्वासोपासिता श्रीविद्या- कएईलहींहीं हसकहलहींहीं सकलहींहीं।
- (१२) इयमुन्मनी श्रीविद्या- कएईलहीं हकहलहीं हसकलहीं।
- (१३) वरुणोपासिता श्रीविद्या- कएईलहीं हकहलहीं सहकलहीं।
- (१४) धर्मराजोपासिता श्रीविद्या- कएकलहीं हकहहीं सहकलहीं।
- (१५) बह्मयूपासिता श्रीविद्या- कसकलहीं हसलकलहीं सकलरलहीं।
- (१६) नागराजोपासिता श्रीविद्या- हसकलहीं हसकहलहीं सकलरलहीं।
- (१७) वायूपासिता श्रीविद्या- कएरलरहीं हकलरहलहीं सरकलरहीं।
- (१८) बुधोपासिता श्रीविद्या- कएईरलहीं हकहलरहीं सलकलरहीं।
- (१९) ईशानोपासिता श्रीविद्या- कहलहीं हकलहललरहीं सकलहीं।
- (२०) रत्युपासिता श्रीविद्या- कएईलहीं हसकहलहीं सकलहीं।
- (२१) नारायणोपासिता श्रीविद्या- कएईलहीं हसकहलहीं सकलहीं सकलहीं हसकहलहीं कएईलहीं।
- (२२) ब्रह्मोपासिता श्रीविद्या- कएईलहीं हकहसरहीं हसकलहीं।
- (२३) जीवोपासिता श्रीविद्या- हसकलहीं हकहसरहीं हसकलहीं।

सर्वतीर्थमयी देवी सर्वदेवस्वरूपिणी।सर्वसाक्षिमयी नित्या सर्वयोनिमयी परा॥५॥

सर्वज्ञानमयी संवित्सर्वप्रज्ञानरूपिणी।सर्वदेवमयी साक्षात् सर्वसौभाग्य सुन्दरी॥६॥

